अच्छे जीवन यापन के लिए "नैतिक शिक्षा"

Dr. Kirti Garg*

Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

सार - *शिक्षा हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा के बिना एक अच्छे जीवन की कल्पना करना कठिन लगता है। शिक्षा के द्वारा ही हम अपना बौद्धिक और चारित्रिक निर्माण कर सकते हैं। शिक्षा के अन्तर्गत् नैतिक शिक्षा का होना अत्यन्त आवश्यक है। नैतिक शिक्षा स्वयं की, समाज की और राष्ट्र की उन्नति के लिए परम आवश्यक है। नैतिक शिक्षा या इसे हम सांस्कारिक शिक्षा कह कर भी पुकार सकते हैं। नैतिक शिक्षा एक बालक के अन्दर वे सब गुण अथवा संस्कार डाल सकती हैं जो उसके रहन-सहन, उसके भविष्य एवं समाज के लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। जन्म लेने के बाद से ही बच्चा माँ के सम्पर्क में अधिक रहता है और उसे पहली शिक्षा भी माँ से ही मिलनी प्रारम्भ होती है। शिशु शैशवकाल को पार कर बाल्यवस्था में और फिर किशोरावस्था में आता है तब उसमें बोलने और बातों को सोचने और समझने की शक्ति बढ़ जाती है। इस अवस्था में बच्चे को और अधिक अच्छे आचरण, नैतिक मूल्यों या सुसंस्कारों की शिक्षा आवश्यक हो जाती है। आज हर कोई ज़्यादा पाने की लालसा में भाग रहा है। ये भागादौड़ी ही कारण है कि आज का हमारा युवा संस्कारों से या यूँ कहें कि नैतिकता से पिछड़ता जा रहा है। सांस्कारिक अथवा नैतिक शिक्षा का मुख्य उदेश्य एक बालक या युवा के व्यक्तित्व का हर तरह से विकास करना है। इसलिए नैतिक शिक्षा का होना आज के समय में अत्यन्त आवश्यक है।*

---------------------------------x---------------------------------

Education is one of the most important aspects of one's life. A life without education is unimaginable. Education enables our cognitive and personality development. Under Education, Value Based Education holds an important position. Value based and ethical educations are synonymous. It is extremely important for the development of self, society and country as a whole. Value based education imparts within every student some special skills and values which might be quite helpful when it comes to his/her lifestyle, future and society. Since birth a child is mostly in a direct contact with its mother and absorbs its initial education from her. From infancy to childhood and subsequently towards adolescence a child learns how to speak and understand things. In this state it is important that a child is imparted with a better conduct and moral values. In today's world every person is in a greed for more and this pursuit for more is the most important reason as to why today's youth is distant from values and morality. Ethical and value based education aims towards the development of the character of a person in every possible way. And this is the main reason for value based education to hold such importance in today's world.

भूमिका

शिक्षा किसी भी देश, समाज और उसमें रहने वाले व्यक्तियों के विकास और उत्थान के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षा के द्वारा ही हम किसी भी स्तर पर अपने स्थान को बना सकते हैं। हम अपनी शिक्षा प्रणाली के आधार पर ही देश, समाज और मानव में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला सकते हैं। शिक्षा के द्वारा ही हम अपना बौद्धिक और चारित्रिक निर्माण कर सकते हैं।

शिक्षा के अन्तर्गत् नैतिक शिक्षा का होना अत्यन्त आवश्यक है। नैतिक शिक्षा इसलिए आवश्यक है क्योंकि इसके द्वारा एक बच्चा अपने सम्पूर्ण जीवन में अपने विकास के साथ-साथ समाज का भी विकास कर सकें और एक अच्छा जीवन जीने के योग्य बन सके। नैतिक शिक्षा स्वयं की, समाज की और राष्ट्र की उन्नति के लिए परम आवश्यक है।

नैतिक शिक्षा का अर्थ:-

नैतिक शिक्षा का अर्थ है कि बच्चों को ऐसी शिक्षा देना जो मूल्यों अर्थात् संस्कारों से परिपूर्ण हो।

Wikipedia. Values education:

"Value education means inculcating in the children a sense of humanism, a deep concern for the wellbeing of others and the nation."

www.ignited.in

Self study history.com:

"Value education means – Human values that is role of family, society and educational institutions in inculcating values in the children."

According to V.C. Good:

"Value-Education is the aggregate of all the process develops abilities, attitudes and other forms of behavior of the positive values in the society in which he lives."

नैतिक शिक्षा या इसे हम सांस्कारिक शिक्षा कह कर भी पुकार सकते हैं। नैतिक शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जिससे एक बालक के अन्दर वे सब गुण अथवा संस्कार आ जाते हैं जो उसके रहन-सहन, उसके भविष्य एवं समाज के लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं और ये गुण हैं:-

1. Brotherhood - भाईचारा
2. Friendship -
3. Empthy
4. Compassion
5. Love
6. Openness
7. Listening
8. Welcoming
9. Acceptance
10. Recognition
11. Appreciation
12. Honesty
13. Fairness
14. Loyality
15. Sharing
16. Solidarity
17. Respect

नैतिक शिक्षा का प्रारम्भ एक प्रकार से शिशु के जन्म के बाद से ही हो जाता है। शिशु के जन्म के पश्चात् से ही किसी न किसी रूप में शिशु की शिक्षा प्रारम्भ हो जाती है। माँ उसका प्रथम गुरू होती है। शिक्षा अच्छे संस्कारों की हो या पुस्तकीय ज्ञान की, कला की हो या विज्ञान की, परोक्ष या अपरोक्ष रूप में प्रारम्भ माँ रूपी गुरू के द्वारा ही होती है। इस तथ्य को पूरे विश्व में कहीं भी, किसी भी युग में नकारा नहीं जा सकता।

जब बच्चा कुछ समझने-बूझने लगता है तभी से उसकी माँ उसमें संस्कारों को डालने का प्रयत्न आरम्भ कर देती है। क्योंकि बचपन में डाले गए संस्कार या नैतिक मूल्य शिशु के जीवन में समयानुसार दृढ़ होते जाते हैं और वह उसके आने वाले भविष्य, रहन-सहन और एक बेहतर समाज बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

जन्म लेने के बाद से ही बच्चा माँ के सम्पर्क में अधिक रहता है और उसे पहली शिक्षा भी माँ से ही मिलनी प्रारम्भ होती है। इसलिए ये माँ का कर्तव्य बन जाता है कि वह बच्चे में अच्छे संस्कारों का सृजन करे।

बाल्यवस्था को भी दो भागों में बाँटा गया है:-

1. पहली अवस्था - एक से छः साल तक जिसे शैशव अवस्था या शैशव काल बोलते हैं।
2. दूसरी अवस्था - सात से ग्यारह साल तक जिसे बाल्यवस्था या बाल्यकाल कहते हैं।

शैशव काल - शैशव काल से ही बच्चे में माँ के द्वारा अच्छे संस्कार पोषित करने का समय आरम्भ हो जाता है। माँ छोटी-छोटी बातों को उसे इशारों से या बोल कर बताती है और उसे उन बातों को सिखाने का प्रयास करती है। जब बच्चा बातों को समझने लगता है तब माँ के साथ-साथ घर के अन्य बड़े सदस्यों का कर्तव्य भी हो जाता है कि वे बच्चों को अच्छे संस्कार या मूल्यवान बातों के आचरण की शिक्षा देनी आरम्भ कर दे। घर में माँ या अन्य सदस्यों द्वारा अच्छे संस्करों व अच्छे आचरण की शिक्षा किसी भी रूप में दी जा सकती है जैसे ---

क. स्वयं घर के सदस्यों द्वारा उन संस्कारों को अपनाया जाए।

ख. माँ या दादी द्वारा सुनाई गई कहानियों के माध्यम से।

ग. कविताओं द्वारा।

घ. गीतों द्वारा।

ड. चित्रकारी द्वारा।

च. घर में किए जाने वाले कार्यों द्वारा।

छ. छोटे-छोटे वैज्ञानिक घरेलू प्रयोगों या कार्यों द्वारा।

किन्तु ये सब शिक्षा बच्चे को इस प्रकार दी जानी चाहिए कि बच्चे को वो चीज़ अच्छी भी लगे और वो उसे आसानी से समझकर अपने जीवन में अपना भी सके। जैसे उदाहरण के लिए यदि बच्चे में ये संस्कार डालना है कि मिलजुल कर काम करना अथवा एक-दूसरे की सहायता करना कितना आवश्यक होता है या ये बताना कि मिलजुल कर रहना कितना अच्छा संस्कार है, तो एक मासूम बच्चे को केवल कविता की चन्द पंकितयों से ये समझाया जा सकता है जैसे --

चुहिया लाई चावल-चीनी, बिल्ली लाई दाना,

हरी सब्ज़ियाँ तोता लाया, धोकर उनको काटा,

मूर्गी पूरा मटका भरकर, दूध कहीं से लाई,

आग जला कर मीठी-मीठी, उन्होंने खीर बनाई,

पूड़ी बनी, बनी तरकारी, सबने मिलजुल खाई,

कामचोर कौवे का मन भी, देख-देख ललचाया।

इस छोटी सी कविता से जहाँ बच्चे को ये सीख मिलती है कि मिलजुल कर काम करना चाहिए वहीं दूसरी ओर वह यह भी जान जाता है कि यदि कोई काम न करे तो उसे कुछ प्राप्त नहीं होता अर्थात् उसे चीज़ों से वंचित रहना पड़ सकता है। इन्हीं पंक्तियों में एक छोटी सी बात यह भी है कि सब्ज़ियाँ धोकर काटनी चाहिए।

इस प्रकार ऐसी छोटी-छोटी बातों से जहाँ एक ओर बच्चे में मिल कर काम करने के गुण संस्कारित होते हैं वहीं दूसरी ओर उसे कार्य करने की प्रेरणा भी मिलती है।

इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि शैशव अवस्था से ही संस्कारिक, मूल्यवान या नैतिक शिक्षा का होना कितना आवश्यक है।

देखने में आया है कि माँ द्वारा दिए जाने वाली संस्कारी शिक्षा से न केवल बालक में एक सभ्य मनुष्य बनने का गुण आता है अपितु समाज में कई बार ऐसे बालक हुए हैं जिन्होंने माँ द्वारा प्राप्त शिक्षा से बड़े होकर बड़े-बड़े कार्य किए और जो विश्व के महान लोगों में गिने जाते हैं।

जैसे एक उदाहरण है कि एक बच्चा जिसका बाल्यकाल में पढ़ाई में मन नहीं लगता था, केवल शरारतें और दिनभर खेलकूद। माँ ने ये सब देख कर उसे अपने साथ घर के कामकाज करते-करते व्यस्त रखने का कार्य किया जिससे उसमें कुछ ठहराव आ सके और घर कार्य करते हुए वह कुछ सीख सके जो उसके भावी जीवन के लिए लाभकारी हो सके और आगे चल कर वह एक अच्छा जीवन जी सके।

एक दिन वही लड़का रसोई घर में आग पर चढ़ी केतली के ढक्कन को ऊपर-नीचे, उठते-गिरते देख रहा था और इसे देख कर उसने माँ से साधारण प्रश्न किया कि ये कैसे हो रहा है। तब माँ ने साधारण शब्दों में ही कह दिया कि ये भाप की शक्ति है। उस दिन माँ के साथ काम करते इस भाप की शक्ति को पहचानने वाला एक दिन एक बड़ा आविष्कारक हुआ, दुनिया जिसे सर जेम्स वाट के नाम से जानती है।

इसलिए बच्चे को हर कार्य से अवगत करवाना भी सांस्कारिक अथवा नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत् आता है। छोटी-छोटी नैतिक अथवा सांस्कारिक शिक्षा से ही मनुष्य समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

जब शिशु शैशवकाल को पार कर बाल्यवस्था में आता है तब उसमें बोलने और बातों को सोचने और समझने की शक्ति बढ़ जाती है। इस अवस्था में बच्चे को और अधिक अच्छे आचरण, नैतिक मूल्यों या सुसंस्कारों की शिक्षा आवश्यक हो जाती है। बाल्यकाल वह अवस्था है जब बच्चा घर से निकल कर बाहर कदम रखना प्रारम्भ करता है या हम ये कह सकते हैं कि वह अपनी स्कूली शिक्षा की ओर बढ़ता है।

यहीं से मेरे विषय की वैधता भी बढ़ती है कि अच्छे जीवन यापन के लिए सांस्कारिक या नैतिक शिक्षा या Value-Based Education for better living कितनी आवश्यक है।

जब बच्चा स्कूली शिक्षा की ओर बढ़ता है तब उससे सम्बन्धित निम्न लोगों का कार्य और कर्तव्य उस बच्चे की ओर और अधिक बढ़ जाता है और ये लोग हैं --

1. माँ-बाप

2. घर के अन्य सदस्य

3. अध्यापक

4. सरकार

बच्चे सबसे पहले स्कूली शिक्षा ग्रहण करते हैं। जिसमें सर्वप्रथम प्राथमिक शिक्षा आती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि प्राथमिक शिक्षा प्रारम्भ होने के साथ ही बच्चे को सर्वप्रथम् अक्षर ज्ञान करवाना प्रारम्भ कर दिया जाता है। जिससे बच्चा उसे ही सीखने में जुट जाता है। आजकल ये देखा गया है कि जब बच्चे की शिक्षा प्रारम्भ होती है तो आरम्भ से ही यानि स्कूल के पहले दिन से ही बच्चे को सीखने का, माँ-बाप को उसे एक ही दिन में सभी अक्षर ज्ञान करवाने का और उनका बच्चा दूसरे बच्चों से कम न सीखे और उनसे पीछे न रह जाए, इसकी होड़ लग जाती है। दूसरी ओर अध्यापकों में पाठ्यक्रम को पूरा करवाने की होड़ लग जाती है। इन सबके बीच बच्चा एक मशीन की तरह अक्षर ज्ञान के झाड़ में फंसता चला जाता है और जो संस्कार वह शिक्षा के रूप में पहले-पहल माँ से प्राप्त करता है, वह भी भूलने लगता है।

जबकि मेरा मानना है कि प्राथमिक शिक्षा में बच्चे की शिक्षा को अक्षर ज्ञान से पूर्व सांस्कारिक, नैतिक या Value based शिक्षा से प्रारम्भ करना चाहिए जैसे --

1. कोई एक कार्य बच्चों को दिया जाए, उसे अनुशासनात्मक तरीके से मिलजुल कर सहमती से पूर्ण करना।
2. मिल-बैठकर भोजन इत्यादि करना।
3. कोई बच्चा यदि किसी तकलीफ में है तो उसकी किस प्रकार सहायता करना।
4. कक्षा के कमरे को किस प्रकार साफ रखना।
5. अध्यापकों से किस प्रकार बात करना।
6. एक-दूसरे से किस प्रकार बात करना।
7. अपनी स्कूल-सम्बन्धी चीज़ों को किस प्रकार साफ और सही ढंग से रखना।
8. किस प्रकार से भोजन करना और भोजन को व्यर्थ न करना।
9. बड़ों और छोटों से किस प्रकार बात करना।
10. बाल-गीतों, देश-भक्ति गीतों व ईश्वर-भक्ति गीतों द्वारा भी बच्चों में समाज, देश और ईश्वर के प्रति अच्छे संस्कार पोषित किए जा सकते हैं।
11. प्रारम्भिक शिक्षा में संगीत का भी एक बड़ा योगदान हो सकता है क्योंकि यदि संगीत के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाए तो किसी भी बात को बच्चे को ग्रहण करना आसान हो जाता है। क्योंकि जब बच्चे को स्वर पर नियन्त्रण करना सिखाया जाता है तो उसको सीखने के साथ-साथ बालक अपने जीवन में भी नियन्त्रण और अनुशासन सीखने लगता है।

प्रयोगात्मक दृष्टि से ऐसा देखा भी गया है कि अन्य विषयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा संगीत विद्यार्थियों में अनुशासन और सहनशीलता तथा संस्कार अधिक देखने को मिलते हैं।

अतः प्राथमिक शिक्षा में अक्षर ज्ञान और माध्यमिक शिक्षा में भाषा ज्ञान एवं अन्य विषयों के ज्ञान के साथ-साथ नैतिक शिक्षा का होना अत्यन्त आवश्यक है। तभी एक बालक एक अच्छे समाज का निर्माण एवं समाज में अपना स्थान बनाने योग्य बन सकता है।

बाल्यवस्था को पार करने के पश्चात् किशोरावस्था का प्रारम्भ होता है। जब वही बालक किशोर बन कर किसी भी दिशा में विशेष योग्यता पाने के लिए आगे बढ़ने लगता है। यहीं से विशेष रूप से अध्यापकों तथा सरकार का कर्तव्य प्रारम्भ हो जाता है। विद्यार्थी के किसी विषय विशेष के अध्ययन के साथ-साथ सरकार कॉलेजों और विश्वविद्यालय स्तर पर इस प्रकार के पाठ्यक्रम स्थापित करे कि जिससे विद्यार्थी अपने विषय विशेष के साथ-साथ सांस्कारिक अथवा नैतिक शिक्षा से भी जुड़ा रहे।

यूँ तो कई कार्यक्रम महाविद्यालय स्तर पर जोड़े गए हैं किन्तु वे भी विश्वविद्यालय स्तर पर आ कर समाप्त हो जाते हैं।

आज का समय इतना दौड़-भाग वाला आ गया है कि हर व्यक्ति जब देखो दौड़ता ही दिखाई देता है। फिर चाहे वह पैसा कमाने की होड़ हो, नाम कमाने की होड़ हो, अमीर बनने की होड़ हो, सब तरफ दौड़ता-भागता इन्सान। ऐसे वक्त में किसी को भी एक दूसरे के लिए वक्त नही है।

--- बच्चों के लिए माँ-बाप के पास वक्त नही क्यूँकि माँ-बाप बच्चों को हर सुविधा देने के लिए दौड़ रहे हैं।

--- बच्चों के पास माँ-बाप के लिए वक्त नही क्यूँकि बच्चे अधिक से अधिक अंक पाने और अच्छी नौकरी पाने के लिए दौड़ रहे हैं।

--- पड़ोसी को पड़ोसी के लिए, रिश्तेदारों को रिश्तेदारों के लिए समय नहीं क्यूँकि सब अपने को दूसरे से आगे करने में दौड़ रहे हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि हर कोई ज़्यादा पाने की लालसा में भाग रहा है। इसी भाग-दौड़ में आज मनुष्य संस्कारों को लगभग भूलता जा रहा है ये संस्कार कहीं पीछे छूटते जा रहे हैं।

ये भागादौड़ी ही कारण है कि आज का हमारा युवा संस्कारों से या यूँ कहें कि नैतिकता से पिछड़ता जा रहा है। इसके कई कारण हो सकते हैं जैसे --

1. माँ-बाप का प्रातः 7बजे से सांय 7बजे तक अपने कार्य स्थल या घर से बाहर रहना।

2. माँ-बाप और बच्चों में आपसी बातचीत का समय न होना।

3. माँ-बाप का बच्चों के प्रति दोस्ती का रिश्ता न होना।

4. माँ-बाप का बच्चों से खुलकर बात न करना।

5. बच्चों को अधिक समय न दे पाना।

6. बच्चों की दिन भर की चर्या से अनभिज्ञ रहना।

7. बच्चों की समस्याओं को सुनने और उसका समाधान निकालने का समय न होना।

8. अध्यापकों का बच्चों के प्रति सहयोगी रूख न होना।

9. अध्यापकों का केवल पाठ्यक्रम पर ध्यान देना अन्य (नैतिक शिक्षा) पर ध्यान न देना।

10. ये कठोर नियम सरकार द्वारा बनाया जाना कि अध्यापक बच्चे को मारना तो दूर ऊँची आवाज़ में भी नहीं बोलेंगे।

ऐसी बहुत सी बातें हैं जो बच्चों में नैतिक मूल्यों अथवा संस्कारों का आभाव डाल रही हैं। आज जब हम अपने आस-पास दृष्टि डालते हैं तो ऐसी बहुत सी बातें देखते हैं कि जिससे ये अनुमान लगाना कठिन नही लगता कि हमारे समाज में आज बच्चों और युवा-पीढ़ी में संस्कारों का कितना पतन हो गया है। दैनिक चर्या में ही हमें संस्कार पतन के कई उदाहरण देखने को मिल जाते हैं जैसे --

जब हम बसों में सफर करते हैं तो देखते हैं कि पहले लोग बसों में बुज़ुर्गों, महिलाओं, अपंगों आदि को स्वयं बैठने के स्थान से उठ कर बैठने का स्थान देते थे मगर आज अधिकतर ये देखने को मिलता है कि युवा व स्कूल के बड़े बच्चे बसों की सीट पर बैठे रहते हैं या ये कहा जाए कि लेटे रहते हैं और कान में मोबाइल फोन के हेड फोन लगा रखते हैं उस समय यदि कोई बुज़ुर्ग, अपंग या बच्चेवाली महिला बस में चढ़ती है तो ये बच्चे अथवा युवा उन्हें बस में मुश्किल से खड़ा देखते रहते हैं। बुज़ुर्ग काँपते हाथ-पाँव से, अपंग अपनी अपंगता से और बच्चे वाली महिला अपने बच्चे को जैसे-तैसे गिरने से बचाते हुए बस में खड़े-खड़े सफर करते हैं। हमारे आज के युवा उन्हें केवल देखते रहते हैं किन्तु उन्हें बैठने का स्थान प्रदान नही करते। कहने का तात्पर्य है कि बच्चों में आज नैतिकता ही देखने को नही मिलती और इस सबका एक बड़ा कारण नैतिक अथवा सांस्कारिक शिक्षा का आभाव है। दूसरी तरफ हम जानते हैं कि बस के कंडक्टर (सहायक चालक) का भी ये कर्तव्य है कि वह बुज़ुर्ग, अपंग अथवा महिला के बस में चढ़ते ही उन्हें बैठने का स्थान उपलब्ध करवाए किन्तु वह भी अपने कर्तव्य के प्रति सजग नही होता। देखा ये जाता है कि उसे केवल अपने किराए के पैसों से ही सरोकार होता है। अपने कर्तव्यों को न समझना भी नैतिक मूल्यों का ह्नास करना है और इन सबका कारण हमारी शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का न होना है।

आज हमारे समाज में दिन-प्रतिदिन ये भी देखने में आ रहा है कि ये हिन्दु-ये मुसलमान, ये अमीर-गरीब, जाति-पाति और इन्हीं के कारण प्रतिदिन लड़ाई-झगड़े, मार-काट हमारे समाज में फैलती जा रही है। जिसके कारण हमारा समाज उन्नति की अपेक्षा पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। ये सब कुछ नैतिक मूल्यों के आभाव के कारण ही है और इसी आभाव के कारण मनुष्य अपने साथ-साथ समाज का भी पतन कर रहा है। अतः इन सब मुश्किलों को समाप्त करने के लिए नैतिक शिक्षा का होना अत्यन्त आवश्यक है।

नैतिक शिक्षा को हम अलग-अलग भागों में बाँट सकते हैं जैसे--

1. आध्यात्मिक शिक्षा

2. भौतिक शिक्षा

3. मानसिक शिक्षा

4. भावात्मक शिक्षा

www.ignited.in

उपरोक्त अलग-अलग प्रकार की नैतिक शिक्षा या सांस्कारिक शिक्षा के द्वारा हम अपने बच्चों और युवाओं में निम्न गुणों अथवा संस्कारों का सृजन कर सकते हैं। जैसे --

1. उनमें बचपन से ही ऐसे संस्कार भरे जाएँ, जिससे वे एक अच्छा नागरिक बन सकें।
2. उन्हें आध्यात्मिक व भावात्मक रूप से तैयार किया जाए कि जिससे उनमें सब धर्मों के प्रति सम्मान और आदर का भाव जागृत हो।
3. आध्यात्मिक और भावात्मक शिक्षा से उनमें प्रेम, करूणा के भाव जागृत हों और उनमें सहन-शक्ति बढ़े।
4. दूसरों की सेवा करने का भाव जागृत हो।
5. धर्म, जाति, अमीर और गरीब के अन्तर से बाहर निकल पाएँ।
6. भौतिक अथवा सामाजिक शिक्षा के द्वारा बच्चों में ऐसे संस्कार अथवा मूल्य डाले जाएं कि वह सामाजिक रूप से भी सुदृढ़ हो सकें।
7. समाज में रहने वाले हर व्यक्ति के प्रति अपने कर्तव्यों को समझे।
8. बड़ों को आदर, छोटों को प्रेम और अपने समान वालों के साथ अपने व्यवहार को अच्छा बना सकें।
9. उसमें भाई-चारे की भावना जागृत हो।
10. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हमारे बच्चों और युवाओं में भाईचारे की भावना स्थापित होनी चाहिए जिससे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हम अपने देश को स्थापित कर सकें।

उदेश्य:

सांस्कारिक अथवा नैतिक शिक्षा का मुख्य उदेश्य एक बालक या युवा के व्यक्तित्व का हर तरह से विकास करना है। उन्हें इस प्रकार शिक्षा प्रदान की जाए कि जिससे वे अपने व्यक्तित्व को निखारने के साथ-साथ एक अच्छे समाज का निर्माण करने योग्य बन सके। नैतिक शिक्षा अथवा संस्कारी शिक्षित बच्चों के द्वारा ही हमारे देश का लोकतान्त्रिक, सांस्कृतिक विकास हो सकेगा और तब एक सभ्य समाज का निर्माण होगा।

उपसंहार:

आजकल ये देखा गया है कि हमारे स्कूलों, कॉलेज और विश्वविद्यालय में केवल अक्षर ज्ञान, भाषा ज्ञान और विषयों से सम्बन्धित शिक्षा ही दी जाती है जिसका उदेश्य केवल कागज़ी ज्ञान बढ़ाना और केवल नौकरी पाना रह गया है जिससे बच्चों का भौतिक, भावात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास नही हो पा रहा है। जिसका सीधा प्रभाव हमारे समाज के विकास पर पड़ता है। इसलिए नैतिक शिक्षा का होना आज के समय में अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि ये शिक्षा हमारी पीढ़ी के भविष्य, रहन-सहन और एक बेहतर समाज बनाने में सहायक सिद्ध होगी। ऐसा मेरा विश्वास है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची;

1. Self study history.com, Human Values–Role of Family, Society and educational institutions in inculcating values.
2. Venkaiah, N, Value Education, PH Publishing Corporation, 4435-36/7, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi, 110002.
3. Goyal, B.R., Value and Education in the Emerging Indian Society.
4. शर्मा, राम, नैतिक शिक्षा।

Corresponding Author

Dr. Kirti Garg*

Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla